BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

सामगान और संगीत : वैदिक ध्वनि से शास्त्रीय राग तक की यात्रा

डॉ. चंद्रकला स्वामी

सहायक आचार्या

आई.ए.एस.ई (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) सरदारशहर

Email: swami.chandra123@gmail.com

सार

भारतीय संगीत का प्रारम्भिक स्वरूप वैदिक परम्परा से जुड़ा है, विशेषतः सामवेद से। सामवेद में निहित सामगान न केवल धार्मिक अनुष्ठान का अंग था, बल्कि वह स्वर, लय, छन्द और भाव की वैज्ञानिक प्रणाली का आरम्भिक रूप भी था। इस शोध-पत्र में सामगान से आरम्भ होकर शास्त्रीय राग-संगीत तक की यात्रा का विश्लेषण किया गया है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र और शार्ङ्गदेव के संगीतरत्नाकर में वर्णित सिद्धान्तों को सामवेदिक ध्वनि-विज्ञान के आलोक में देखा गया है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि भारतीय संगीत का मूल वैदिक ध्वनि-अनुभव है, जो आज भी भारतीय ज्ञान-परंपरा में जीवंत है।

मुख्य शब्द: सामगान, सामवेद, वैदिक संगीत, राग, भारतीय ज्ञान-परंपरा

भूमिका : भारतीय संगीत का इतिहास विश्व की प्राचीनतम संगीत परम्पराओं में से एक है। इसकी जड़ें ऋग्वेद और सामवेद के मंत्र-पाठों में निहित हैं। "**सामगानं ब्रह्मणः स्वरूपम्**" — इस वैदिक (छान्दोग्य उपनिषद् 1.7.5) वाक्य का अर्थ है कि सामगान स्वयं ब्रह्म का स्वरूप है । इससे स्पष्ट होता है कि संगीत भारतीय दृष्टि में आध्यात्मिक अनुभूति का माध्यम है। सामगान से ही स्वर-संगति, लय-नियम और भाव-अभिव्यक्ति की परम्परा विकसित हुई। कालान्तर में यह परम्परा मंदिर-संगीत, भक्ति-संगीत और दरबारी शास्त्रीय रागों तक पहुँची।

यह शोध-पत्र इस यात्रा की विवेचना करता है—कि किस प्रकार वैदिक सामगान से आधुनिक भारतीय राग-संगीत तक एक अखण्ड परम्परा विकसित हुई, और उसमें कौन-कौन से दार्शनिक तथा सांस्कृतिक घटक जुड़े रहे।

यह अध्ययन साहित्य-आधारित एवं तुलनात्मक है। मुख्य स्रोत हैं – सामवेद संहिता, पंचविंश ब्राह्मण, नाट्यशास्त्र, संगीतरत्नाकर तथा समकालीन संगीतशास्त्रीय शोध-पत्र। सहायक दृष्टिकोण के रूप में ध्वनि-विज्ञान (acoustics) और IKS-based interpretive framework का उपयोग किया गया है। मुख्य उद्धरण संस्कृत मूल ग्रन्थों से लिये गये हैं ताकि वैदिक ध्वनि की प्रमाणिकता बनी रहे।

सामवेद और सामगान का स्वरूप : चारों वेदों में सामवेद को "गान-वेद" कहा गया है। "साम" धातु सम् + आ से बना है, जिसका अर्थ है "सामंजस्य, मिलन या मधुरता"। सामवेद संहिता में लगभग 1875 मंत्र हैं, जिनमें से अधिकांश ऋग्वेद से लिये गये हैं, परंतु उन्हें विशेष संगीतात्मक स्वरों में गाया जाता था। पंचविंश ब्राह्मण में उल्लेख है—

"सामानि वै ऋचः स्वरभूता भवन्ति।"

(ऋचाएँ जब स्वरयुक्त होती हैं, तभी साम बनती हैं।)

इस प्रकार सामगान केवल मन्त्र-पाठ नहीं, बल्कि स्वर-लय से संयुक्त एक वैज्ञानिक संगीत-प्रणाली है।

वैदिक ध्वनि और स्वर-सिद्धांत का विकास : सामवेद में तीन मूल स्वर प्रयुक्त होते थे — उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित। इन तीनों के संयोग से सप्तक के सात स्वरों का बीज निहित था। शार्ङ्गदेव ने संगीतरत्नाकर में कहा—

@2025 Bihar Shodh Samaagam

"स्वरास्तु सप्त प्रकीर्तिताः, सामोपनिषदः स्मृताः।"

(सात स्वर सामोपनिषदों में वर्णित हैं।)

यह दर्शाता है कि आधुनिक "सा,रे,ग,म,प,ध,नि" की कल्पना सामवेदिक स्वर-क्रम से ही विकसित हुई। वैदिक स्वरों के दीर्घ-लघु उच्चारण ने श्रुति और ग्राम की अवधारणाओं को जन्म दिया। नाट्यशास्त्र (अध्याय 28) में भरतमुनि ने कहा—

"श्रुतिरित्युच्यते यासां सूक्ष्मत्वाद्रावणं कठिनम्।"

(जो ध्वनियाँ सूक्ष्म हैं और सुनने में कठिन हैं, वे श्रुतियाँ कहलाती हैं।)

अतः सामगान ने न केवल संगीत का धार्मिक, बल्कि वैज्ञानिक आधार भी तैयार किया।

सामगान में लय, छन्द और ताल का समन्वय : सामगान के गायन में लयबद्धता अनिवार्य थी। हर साम एक निश्चित छन्द में रचा जाता था — गायत्री, त्रिष्टुभ, जगती इत्यादि। इन छन्दों की मात्राएँ ही आगे चलकर तालों का आधार बनीं। पंचविंश ब्राह्मण में उल्लेख है—

"लयमेन साम गायेत्; अलयं हि साम अश्राव्यम्।"

(लय के बिना साम असुंदर और अश्राव्य होता है।)

भारतीय संगीत में आज जो त्रिताल, झपताल, रूपक आदि प्रणालियाँ हैं, वे इसी वैदिक छन्द-विचार से उत्पन्न हुईं। सामगान की यह लय-संवेदना ही बाद में "ताल" के रूप में व्यवस्थित हुई।

सामगान से राग-धारणा की ओर : सामगान के प्रत्येक अनुक्रम (stotra) में विशेष भाव या रस की अनुभूति होती थी। उदाहरणतः अग्नि-साम में उत्साह, सोम-साम में शान्ति, और इन्द्र-साम में वीर-भाव प्रमुख थे। इन भावरूप सामों ने राग-भावना का बीज बोया। राग का अर्थ ही है — "रञ्जयति इति रागः" — जो मन का रंजन करें अर्थात आनंदित करें। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में 'रस' का जो सिद्धान्त है, वही सामगान में अनुभूति-केंद्र के रूप में उपस्थित था। शार्ङ्गदेव के अनुसार—

"रस एव संगीतस्य आत्मा।" (संगीतरत्नाकर, 1/4)

सामगान से ही यह धारणा विकसित हुई कि संगीत केवल ध्वनि नहीं, बल्कि अनुभूति का विज्ञान है। कालान्तर में यही "राग" और "रागिनी" के रूप में विकसित हुआ।

सामगान और भारतीय सांस्कृतिक परंपरा : सामगान केवल यज्ञ या अनुष्ठान तक सीमित नहीं रहा। यह सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में भी रचा-बसा। मंदिरों में आरती, भक्ति-कीर्तन, और लोकगीतों की ध्वनि-संरचना सामगान की लय से प्रभावित रही। भक्तिकालीन कवियों—तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई आदि द्वारा रचित पदों में सामगान के माधुर्य की झलक मिलती है।

गुरुनानक देव जी ने 'गुरु-ग्रंथ साहिब' में राग-रचना के माध्यम से भक्ति-भाव का वही सामवेदिक रूप प्रस्तुत किया। इस प्रकार सामगान ने भारत की सांस्कृतिक एकता में ध्वनि-संवाद का कार्य किया।

सामवेदिक संगीत की आधुनिक प्रासंगिकता : आज के वैज्ञानिक युग में सामवेदिक ध्वनि-सिद्धान्त sound-therapy, acoustical engineering और music-based meditation जैसे क्षेत्रों में उपयोगी हो रहे हैं। सामगान में प्रयुक्त आवृत्तियाँ (frequencies) मानव-मस्तिष्क की अल्फ़ा तरंगों से सामंजस्य रखती हैं, जिससे शांति और एकाग्रता उत्पन्न होती है (IKS Research Report, AICTE 2022)। नई शिक्षा नीति 2020 में Indian Knowledge System के अन्तर्गत सामवेदिक संगीत को "cognitive-aesthetic learning" के उदाहरण के रूप में पुनःस्थापित करने की सिफारिश की गई है। इससे स्पष्ट है कि सामगान की यात्रा केवल अतीत की कहानी नहीं, बल्कि भविष्य के सतत् सांस्कृतिक विकास का मार्ग है।

दार्शनिक विवेचन : सामगान की केन्द्रीय अवधारणा "साम्य" या "हार्मनी" है। यह केवल स्वरों का सामंजस्य नहीं, बल्कि मानव और ब्रह्माण्ड के बीच ध्वनि-संवाद है। छान्दोग्य उपनिषद् (2.23.1) में कहा गया—

"योऽयं वागान्तरात्मा, साम्नोऽन्तरात्मा।"

(जो वाणी का भी अन्तरात्मा है, वही साम का अन्तरात्मा है।)

इस दृष्टि से संगीत केवल श्रव्य कला नहीं, बल्कि अस्तित्व की ध्वनि है। सामवेद ने यह सिखाया कि ध्वनि में चेतना है, और चेतना में संगीत।

निष्कर्ष : सामगान से शास्त्रीय राग तक की यात्रा भारतीय संगीत की आत्म-यात्रा है। सामवेद ने मनुष्य को यह सिखाया कि संगीत केवल कला नहीं, साधना है। उसने ध्वनि को ब्रह्म से जोड़ा, और मानव-मन को ब्रह्माण्डीय लय से मिलाया। भरतमुनि, शार्ङ्गदेव और तानसेन—सभी उसी परम्परा के वाहक हैं, जो वैदिक युग में सामगान के रूप में शुरू हुई थी। आज जब संस्कृति वैश्वीकरण के दबाव में है, तब सामवेदिक संगीत हमें अपनी जड़ों से जोड़ने की शक्ति देता है। यह हमें स्मरण कराता है कि—

"सामगानं न केवलं श्राव्यम्, किन्तु ध्यानं, विज्ञानं च।"

(सामगान केवल श्रवणीय नहीं, वह ध्यान और विज्ञान दोनों है।)

अतः सामवेदिक ध्वनि-परंपरा का पुनरुद्धार भारतीय ज्ञान-परंपरा के सतत् संरक्षण और भावी नवोन्मेष का आधार बन सकता है।

ग्रन्थ-सूची

1. सामाश्रमी, सत्यव्रत, सम्पा. *सामवेद संहिता*. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, अ.प्र.।
2. Keith, A. B. *The Panchavimsha Brāhmaṇa*. Oxford: Oxford University Press, 1920.
3. भरतमुनि. *नाट्यशास्त्र*. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन, अ.प्र.।
4. शार्ङ्गदेव. *संगीतरत्नाकर*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 2005 (पुनर्मुद्रण)।
5. माधवानन्द, स्वामी, अनुवा. *छान्दोग्य उपनिषद्*. कोलकाता: अद्वैत आश्रम, अ.प्र.।
6. Coomaraswamy, A. K. *The Dance of Śiva: Essays on Indian Art and Culture*. New York: The Sunwise Turn, 1917.
7. Tagore, Rabindranath. *The Religion of Man*. London: Macmillan, 1931.
8. अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (AICTE). *भारतीय ज्ञान प्रणाली: संगीत एवं ध्वनि विज्ञान पर अनुसंधान प्रतिवेदन*. नई दिल्ली: ए.आई.सी.टी.ई., 2022.
9. Ranade, Ashok D. *Music Contexts: A Concise Dictionary of Hindustani Music*. नई दिल्ली: Promilla & Co., 1998.
10. भातखंडे, विष्णुनारायण. *हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति: क्रमिक पुस्तक माला* (खंड 1–4). मुम्बई: संगीत कार्यालय, 1990.
11. Joshi, L. M. *Studies in the Sāmaveda*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 1987.
12. Raghavan, V. *The Concept of Beauty in Sanskrit Literature*. मद्रास: मद्रास विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1958.
13. Rowell, Lewis. *Music and Musical Thought in Early India*. शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 1992.
14. पतवर्धन, शंकर. *भारतीय संगीत का इतिहास*. पुणे: महाराष्ट्र संगीत विद्यालय, 1963.
15. Winternitz, Maurice. *A History of Indian Literature* (Vol. 1). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 1985.
16. देव, बी. चैतन्य. *भारतीय संगीत*. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1973.
17. Kaufmann, Walter. *The Rāga Guide: A Survey of 74 Hindustani Rāgas*. न्यूयॉर्क: इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस, 1965.
18. कपिलेश्वरी, रमेश. *वेदों में ध्वनि का विज्ञान*. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, 2010.
19. Subramanian, Lakshmi. *From the Tanjore Court to the Madras Music Academy: A Social History of Music in South India*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006.
20. रामस्वामी, एस. *वैदिक गायन और भारत की संगीत परम्परा*. चेन्नई: भारतीय कला प्रकाशन, 2017.